



जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :डॉ. शेखर सिंह बघेल
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 66
दिनांक 19.04.2022

माटी की आत्मा है पराली - कुलपति डॉ बिसेन

परानी प्रबंधन के बेहतर उपायों को अपनाएं पराली ना जलाएं

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के कुलपति प्रोफेसर प्रदीप कुमार बिसेन में अन्नदाता किसानों से अपील की है कि पराली, माटी के लिए सोना है क्योंकि फसल अवशेषों को प्रबंधन हेतु वैज्ञानिकों ने शोध द्वारा नवीनतम खोज कर दिया है अतः फसलों के अवशेष जो धरती माता के आहार हैं, इन्हें कृषि यंत्रों के द्वारा मिट्टी में मिला सकते हैं इनके साथ ही फसल अवशेषों को एक स्थान पर एकत्र कर जवाहर जैव विघटक (डी-कंपोजर) का प्रयोग कर बेहतरीन खाद बनाकर जैविक एवं प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हो सकते हैं भूमि में उपस्थित असंख्य सूक्ष्म जीवों का भोजन यह पराली (फसल अवशेष) है इनका सही प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति व स्वास्थ्य को सुधार कर सकते हैं पर्यावरण प्रदूषण कम करने के साथ ही पौधों के लिए प्राकृतिक रूप से पोषक तत्वों की उपलब्धता को बढ़ाया जा सकता है

विश्वविद्यालय के संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ जी के कोतू ने बताया कि वर्तमान में गेहूं, चना की कटाई प्रारंभ है ऐसे समय में कृषक भाई पराली को समस्या मानकर जला देते हैं परिणाम स्वरूप जनधन व पर्यावरण को बहुत नुकसान होता है फसल अवशेष जलाने से प्रमुख रूप से जो हानि होती है उसमें पोषक तत्वों का नष्ट होना, जैविक कार्बन जलकर नष्ट हो जाता है, भूमि में उपलब्ध सूक्ष्मजीव, मृदा उर्वरता को नुकसान, पर्यावरण प्रदूषण, ग्रीन हाउस जैसे जैसे मीथेन, कार्बन मोनो ऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड एवं नाइट्रोजन आदि का उत्सर्जन जो ग्लोबल वार्मिंग का प्रमुख कारक है, पराली जलाने से ब्लैक कार्बन बढ़ जाता है, मिट्टी का तापमान बढ़ने से मृदा सख्त होती है, माटी का जल धारण क्षमता कम हो जाती है, प्रमुख पोषक तत्व नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटैश एवं सल्फर आदि जलकर नष्ट हो जाते हैं मिट्टी की ऊपरी 15 सेंटीमीटर पर सक्रिय सूक्ष्मजीव मित्र कीट एवं केंचुए आदि पराली द्वारा जलकर नष्ट हो जाते हैं, पराली जलाने से उपयोगी पशु-चारे की कमी होती जा रही है खेती में लागत के लगातार बढ़ते, जैवविविधता को अत्यधिक नुकसान पहुंच रहा है, पराली जलाने से कई बार खेतों में लगी फसल खलियान, घरों व गांव में पहुंच जाती है एवं बहुत अधिक जान माल की हानि होती है

फसल अवशेष का खेतों में मिलाने से लाभ कार्बनिक पदार्थों की उपलब्धता बढ़ने से सक्रिय सूक्ष्म जीवों को भोजन प्राप्त होता है एवं मृदा के भौतिक गुणों में सुधार हो जाता है पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ जाती है, मृदा का पीएच में सुधार विद्युत चालकता, आयन विनिमय क्षमता में लगातार सुधार होता जाता है, खरपतवार नियंत्रण एवं फसल उत्पादकता में वृद्धि, उत्तम जैविक खाद खेतों हेतु प्राप्त हो जाती है, फसल अवशेषों को एक स्थान में एकत्र कर डीकंपोजर से जैविक खाद ने बदलकर अतिरिक्त आमदनी का जरिया बनाया जा सकता है

अतः वर्तमान में हमारे कृषि वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान से पराली का बेहतर समाधान निकाला है जैसे फसल अवशेष का जैविक प्रबंधन कैसे करें इस हेतु सूक्ष्म जीव अनुसंधान एवं उत्पादन केंद्र के प्रमुख वैज्ञानिक एवं प्रभारी डॉक्टर एन. जी. मित्रा ने बताया कि जवाहर डी कंपोजर द्वारा फसल अवशेष एवं कचरे से बेहतरीन खाद बनाई जा सकती है इस हेतु गेहूं की पराली को एक स्थान पर एकत्र कर इसके बाद डी कंपोजर का प्रयोग करें कृषि विश्वविद्यालय के जवाहर जैव उर्वरकों और उनके द्वारा निर्मित जवाहर डाइजेस्टर का प्रयोग करें यह किसान भाइयों हेतु प्रत्येक जिले में कृषि विज्ञान केंद्र में उपलब्ध होता है इस



जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

तरह डी कंपोजर को फसल अवशेष में छिड़ककर एक माह में बेहतरीन उच्च गुणवत्ता की जैविक खाद बनाकर खेतों में प्रयोग कर सकते हैं हमारे अन्नदाता कृषक भाई फसल कटाई के उपरांत खेतों में फसल अवशेष पराली को खाद बनाने हेतु जवाहर बायोडायजेस्टर का उपयोग गेहूं फसल की पराली को डीकंपोज करने के लिए 2 लीटर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें, नमी की मात्रा 60 से 70% बनाए रखना चाहिए एवं 45 दिनों में पराली डीकंपोज किया जा सकता है जैविक जवाहर जैव उर्वरकों की तरह ही कार्य करता है साथ ही मृदा स्वास्थ्य में सुधार करता है यह पौधों के लिए पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाता है एवं जैव कीट नियंत्रक के रूप में भी यह पौधों को विभिन्न प्रकार बीमारियों से बचाता है फसल अवशेष के अच्छे एवं बेहतर रिजल्ट प्राप्त करने हेतु 30 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान होना चाहिए तथा वायु संचार उपयुक्त होना चाहिए धरती का सोना पराली को सही प्रबंधन कर माटी के स्वास्थ्य, मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण, जैव विविधता एवं मृदा के सूक्ष्मजीवों के साथ ही पोषक तत्वों का संरक्षण-संवर्धन में अति महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं